मध्यकालीन कविता

अवधारणा और स्वरूप

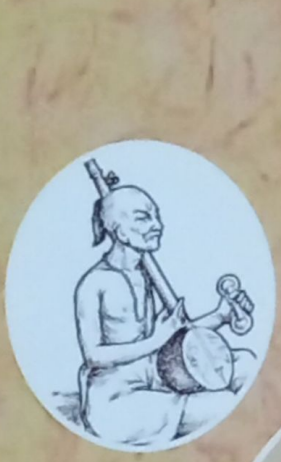

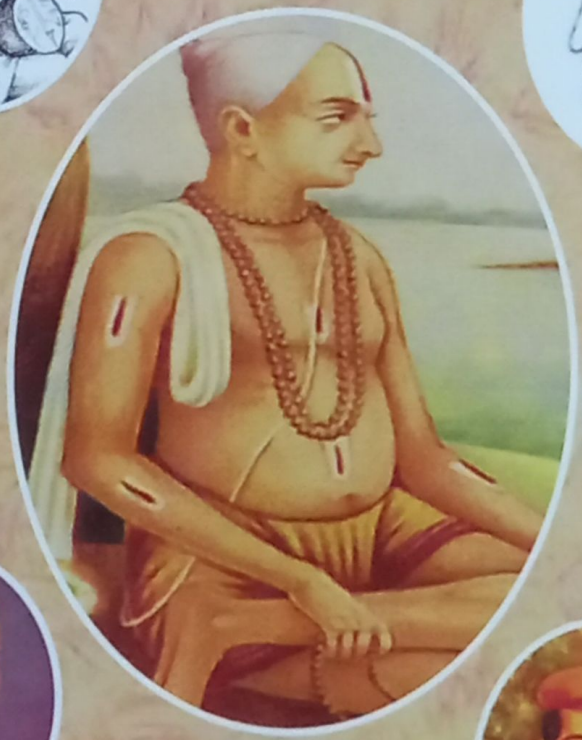

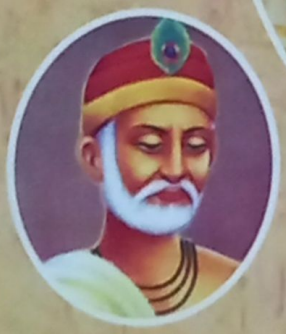

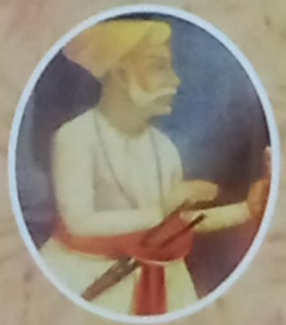

संपादक
डॉ. प्रीति सिंह
नितेश उपाध्याय

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक, संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN 978-93-91435-26-4

प्रथम संस्करण, 2021

© संपादकाधीन

पुस्तक : मध्यकालीन कविता : अवधारणा और स्वरूप

संपादक : डॉ. प्रीति सिंह, नितेश उपाध्याय

प्रकाशक : **संकल्प प्रकाशन**

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

मूल्य : ₹ 595/-

पृष्ठ : 288

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रण : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

अनुक्रम

1. रीतिकाव्य : अध्ययन की नयी दृष्टि
प्रो. प्रभाकर सिंह 11-34

2. कबीर साहित्य की वर्तमान अर्थवत्ता
प्रो. सदानंद शाही 35-41

3. भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग
प्रो. जंगबहादुर पाण्डेय 42-45

4. राष्ट्रीय अखंडता में संतों की सामाजिक भूमिका
डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि' 46-52

5. रामचरितमानस में समाजपरक जीवन मूल्य
डॉ. अमिता रानी सिंह 53-60

6. भक्ति काव्य : प्रकृति एवं स्वरूप
डॉ. प्रीति सिंह 61-75

7. रस ध्वनि के परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस की काव्यभाषा का विवेचन
डॉ. सुजीत कुमार सिंह 76-85

8. श्री वल्लभ गुरू तत्त्व सुनाओ, लीला भेद बताओ (वल्लभाचार्य और उनका दर्शन)
डॉ. विनम्र सेन सिंह 86-94

9. रीतिकालीन हिन्दी-काव्य में भगवद् भक्ति
डॉ. चन्द्रकान्त सिंह 95-101

10. गुरुनानक के काव्य में धर्म और आचरण की प्रासंगिकता
डॉ. प्रिया शर्मा 102-108

11. भक्तिकाव्य का मानवीय- सांस्कृतिक स्वरूप
डॉ. सत्यदेव 109-116

12. भक्ति आंदोलन के प्रेरणा-स्रोत
डॉ. सिन्धु सुमन 117-124

13. भक्ति-आन्दोलन का सामाजिक पक्ष एवं स्वामी रामानन्द
डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह 'संजय' 125-137

10.

गुरुनानक के काव्य में धर्म और आचरण की प्रासंगिकता

डॉ. प्रिया शर्मा

गुरुनानक देव सिक्ख धर्म के जन्मदाता थे। उन्होंने आदर्श जीवन के जो सिद्धांत मनुष्य को दिए, उन्हें हम सिक्ख धर्म के नाम से जानते हैं। यह धर्म सबसे अधिक बल ईश्वर की भक्ति अर्थात् नाम–स्मरण पर देता है और मनुष्य को निरर्थक विश्वासों तथा कर्मकाण्डों का त्याग कर उच्च, निर्मल, धार्मिक तथा सदाचारिक गुण धारण करके आचरण को पवित्र रखने की शिक्षा देता है। इसका कार्य–क्षेत्र यहीं तक सीमित नहीं बल्कि इसका मनोरथ तो मनुष्य को जीवन के सभी क्षेत्रों धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक आदि में उचित मार्गदर्शन करवाना है। अपने इस मौलिक तथा स्वतंत्र धर्म को प्रचारित करने के लिए गुरुनानक जी को उस समय के प्रचलित धर्मों का विरोध भी सहना पड़ा, क्योंकि उन्होंने उनके अनुचित कार्यों का बड़े साहस तथा निर्भयता से खंडन किया था। प्रत्येक मनुष्य चाहे वह किसी भी धर्म को मानने वाला क्यों न हो, उसे उस धर्म की असलियत का भी अहसास कराया। ऐसे गुरुनानक देव का धर्म मज़हबों, सम्प्रदायों से ऊपर उठकर मानवतावादी भावना तक आ पहुँचता है।

वास्तव में धर्म की कसौटी मनुष्य ही है। मनुष्यों की विशिष्टता दिखाने वाली यदि कोई वस्तु है तो वह धर्म है। 'धर्म वह है, जो व्यक्ति और समाज को धारण करे, उसका पोषण और संवर्धन करे। गर्नारी महतो ने धर्म को कर्म का पर्याय माना है– 'वह कर्म जिसका संपादन, किसी संबंध या गुणविशेष के विचार से उचित और आवश्यक हो, धर्म है।' औचित्य की दृष्टि से धर्म सार्वकालिक, सार्वदेशिक और सार्वभौमिक है। समाज में रहते हुए व्यक्ति जिस धर्म का पालन करता है, वही मानव धर्म है। धर्म व्यक्ति को दूसरों पर श्रद्धा एवं विश्वास करना सिखाता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी 'धर्म को अन्य व्यक्ति में श्रद्धा उद्रिक्त करने वाला' मानते हैं। धर्म मानव का उदार कर्तव्य है। 'यह कर्तव्य मानवीय संबंधों और परिस्थितियों के विविध रूपों में चरितार्थ होता है। धर्म